

महावीर जयन्ती स्मारिका-१९६४ (फोल्डर नं. ०४०४१)
सम्पादक - श्री चैनसुखदास न्यायतीर्थ

मुख्य टाइटल	
अनुक्रमणिका	
सन्देश -----	७
सम्मतियाँ -----	१३
प्रकाशकीय -----	१६
सम्पादकीय -----	१७
भगवान महावीर का स्तवन -----	१९
भगवान महावीर एक सिद्धान्त थे - पं. चैनसुखदास -----	२१
हिन्दी विभाग	
भारतीय संस्कृति को जैन संस्कृति का योगदान - डॉ. छबिनाथ त्रिपाठी -----	१
जैन धर्म की प्राचीनता - डॉ. ज्योति प्रसाद जैन -----	९
भारतीय भाषाओं को जैन साहित्यकारों की देन - मुनि श्री बुद्धमलजी -----	१५
जैनधर्म और राज्य व्यवस्था - श्री रामावतार शर्मा -----	३०
जैन दर्शन और विज्ञान के आलोक में आरोह-अवरोहशील विश्व मुनि श्री महेन्द्रकुमारजी	
द्वितीय -----	३५
वेदों में तीर्थकरों की स्तुति - मुनि श्री महेन्द्र कुमारजी प्रथम -----	३७
पांच मुक्तक (कविता) - श्री तन्मय बुखारिया -----	४३
धर्म का मापदण्ड-आध्यात्मिकता - डॉ. रतनकुमार जैन -----	४४
संवत्सरी पर्व का सांस्कृतिक महत्त्व - श्री बट्टीप्रसाद पंचोली -----	५२
जैन धर्म का उदय और विकास - डॉ. पुरुषोत्तमलाल भार्गव -----	५८
संदेश काव्य परम्परा में जैन कवियों का योगदान - प्रो. शान्तिकुमार पारख -----	६१
महावीर और गोशालक - मुनि श्री नगराजजी -----	६५
महयंदिण मुनि - डॉ. वासुदेवसिंह -----	६८
बैराठ स्थित मुगलकालीन जैन मन्दिर - डॉ. सत्यप्रकाश -----	७१
अपरिग्रह और समाजवाद - श्री बिरधीलाल सेठी -----	७३
जैन अभिलेखों का ऐतिहासिक महत्त्व - श्री रामवल्लभ सोमानी -----	७८
महावीर का अनैकांतिक अहिंसा-दर्शन - श्री युगल जैन -----	८३
धर्म व संस्कृति की आत्मा - श्री सत्यदेव विद्यालंकार -----	८६
जैन कवि नवल और उनकी भक्ति - डॉ. सोमनाथ गुप्त -----	९४
ढूंढाड़ी जैन गद्य साहित्य - श्री गंगाराम गर्ग -----	९७
जैन कवियित्री जड़ावजी की काव्य साधना - डॉ. नरेन्द्र भानावत -----	१०१
महाश्रवण महावीर का दिव्य जीवन - डॉ. कस्तूरचन्द कासलीवाल -----	१०८

अहिंसा का व्यापक चिंतन और आचार – श्री जवाहिरलाल जैन -----	१११
भगवान महावीर की मंगलमय वाणी – श्री अजरचन्द्र नाहटा -----	११३
नैतिक सद्गुण – डॉ. ईश्वरचन्द्र शर्मा -----	११६
जैन धर्म का आत्मत्व और कर्म सिद्धान्त – पं. चैन सुखदास न्यायतीर्थ -----	११२
भारतीय दर्शनों में चेतनास्तित्व – आचार्य रमेशचन्द्र शास्त्री -----	१२६
महावीर वर्धमान – राजकुमारी लुहाड़िया -----	१३५
तुम्हें मिला जब जन्म -----	१३६

English Contents

Lord Mahavira and the Mission of Jainism – Lothar Wendel-----	1
The Role of the Idea of Action (Kriyavada) in Jaina Philosophy – G C Pande-----	4
Jainism in Modern Times – Wilfried Nolle -----	6
War and Ahimsa Ideology – Dr. Bool Chand -----	10
The Ancient Town of Rajorgarh – Dr. Kailash Chand Jain-----	14
Sramanic Foundations of Ancient Egypt – Sh. Ram Chandra Jain-----	17
Sramana Tradition and Vedic Literature – Dr. S K Gupta-----	22
Practicability of Ahimsa (Non-Violence) – Sh. Rajmal Sanghi-----	28
The Eight fold Path of Yoga and Jainism – Dr. Kamal Chand Sogani-----	38